State and Central Ministries. Why have not these agencies been able to bring about this coordination till now? What has happened to those reports?

I know Mr. Sanjiva Reddy is a man of few words, but he is a person of brilliant ideas and with powers of brilliant execution. I wanted that if he agreed to this circulation, some more ideas and fruitful things might have emerged from the public and then he would have been able to study them and bring forward a Bill which would have fulfilled the spirit of this Bill. After all, I stand for the soul of transport. I cannot give it the kind of body which Mr. Samanta wants or Mr. Kotoki wants. Mr. Kotoki wants something about Brahmaputra and Mr. Samanta wants something else. Mr. Chaturvedi wants that road haulage should be put on a better basis.

I want that the Minister should have said, "I do not want it to be circulated; I accept it and then I will bring forward a Bill very soon which will fulfil the intentions of the mover". But he has said nothing of the kind. I ask him to say it at least now, so that something is done to rationalise the transport systems in this country. With these words, Sir, I take my seat.

17 hrs.

Mr. Chairman: What does the hon. mover want to do with his Bill? Does he want to withdraw it?

Shri D. C. Sharma: Sir, do you mean to say that I will fight with this friend here?

Mr. Chairman: Is he withdrawing his Bill?

Some hon. Members: Yes.

Mr. Chairman: Let him say that?

Shri D. C. Sharma: Yes, I want to withdraw the Bill.

Mr. Chairman: Has he the leave of the House to withdraw his Bill?

The Bill was, by leave, withdrawn.

17.01 hrs.

PROHIBITION OF MANUFACTURE AND IMPORT OF HYDROGENATED VEGETABLE OILS BILL

श्री यशपाल सिंह (कैराना) : सभापति महोदय, महात्मा गांधी ने यह कहा था कि जिस तरह जाली रुपया बनाने वाले को सजा दी जाती है, ऐसे ही जाली घी बनाने वाले को सजा दी जानी चाहिये । लेकिन यह गांधी जी के नाम पर चलने वाली सरकार करोड़ों आदमियों के स्वास्थ्य को नष्ट करती है, उन के धर्म को नष्ट करती है, उन की नैतिकता को नष्ट करती है, क्योंकि—

जैसा खावे अन्न, वैसा बन जावे मन ।

यह बहुत पुराना प्रोवर्ब है—as a man eats, so he becomes—जो बनावटी घी खायेगा, उस के ख्यालात जरूर बनावटी बन जायेंगे, जो बनावटी चीज इस्तेमाल करेगा, उस में मौलिकता नहीं रह सकती । इसलिये यह सरकार हर चीज में एडल्ट्रेशन करती है, इस की कोई स्थिर नीति नहीं है, कोई ऐसी पौलिसी नहीं है, जो मजबूत हो ।

अमरीका जाते हैं तो कहते हैं कि हमारे और तुम्हारे ट्रेडीशन्ज मिलते हैं, रूस जाते हैं तो वहां भी कहते हैं कि हमारे और तुम्हारे ट्रेडीशन्ज मिलते हैं, जब कि एक देश ईश्वरवादी है और दूसरा अनीश्वरवादी है । इन का कोई सिद्धान्त नहीं है और सभापति महोदय, मैं इस बात को साफ कह देना चाहता हूं कि जैसा अरब मुमालिक में कैरेक्टर का मतलब तौहीद से है, ईश्वर की उपासना से है, जैसे जर्मनी में कैरेक्टर का मतलब देशभक्ति से है वैसे ही मेरे हिन्दुस्तान में कैरेक्टर का मतलब ब्रह्मचर्य से है, विसुअल प्योरिटी से है । जो शख्स डालडा का इस्तेमाल करता है,

[श्री यशपाल सिंह]

वह कभी ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकता। यह निश्चित बात है। शेरनी का दूध सिर्फ सोने के बर्तन में टिकता है, अगर किसी और बर्तन में डाल दें, तो बर्तन टुकड़े टुकड़े हो जायगा, ठीक उसी तरह से यह जो देश गांधी जी का है, यह देश जो दयानन्द का है, यह देश जो भगवान बुद्ध का है, यह देश जो लोक मान्य तिलक का है, इस देश के करोड़ों मनुष्यों की हैल्थ को इस तरह से खराब करने का पाप हमारी इस सरकार के ऊपर है। महात्मा गांधी और गौतम बुद्ध जहां पैदा हुए, विवेकानन्द और दयानन्द जहां पैदा हुए, इन्होंने इस छोटी सी बात को पहाड़ बना कर रख रखा है, जैसे अंग्रेजी में कहते हैं—

"They are making a mountain out of a mole-hill'

यह मसला कोई मसला नहीं है। इस मसले पर सरकार अरबों रुपया खर्च कर चुकी है, लेकिन यह मसला हल नहीं होता है। क्या, सभापति महोदय, यह हमारे लिये शर्म की बात नहीं है?

दिल्ली मिल्क स्कीम का दूध जब हमारे दरवाजे पर आता है, तो लोग दो-दो घन्टे पहले लाइन लग कर खड़े हो जाते हैं—भिखमंगों की तरह खड़े होते हैं, लेकिन वह दूध क्या है——उस दिन कामथ साहब ने पार्लियामेंट की मेज पर रखा था, दो दो ढ़ाई-ढ़ाई इंच लम्बे कीड़े कुल-बुला रहे थे, उस में क्या क्या चीजें हैं, मेंढ़क का अर्क, मछली का मूत है, मरी हुई छिपकली है, उस में झींगर हैं, उस में बदबू उठ जाती है और चार-चार दिन बाद पीने को दिया जाता है.. (व्यवधान) इस बात को सरकार मान चुकी है।

The Deputy Minister in the Ministry of Food, Agriculture, Community Development and Cooperation (Shri Shinde): Sir, I think the hon. Member is supposed to speak on vanaspati.

Mr. Chairman: I hope the hon. Member will stick to his Bill. Unnecessary allegations may not be made. (*Interruptions*). Order, order. I can hear only one hon. Member at a time.

Shri Shinde: Sir, thousands of people consume milk supplied under the Delhi Milk Scheme. This sort of statements are likely to create some misunderstanding. I wish to submit very humbly that what the hon. Member says is absolutely incorrect and without any foundation.

श्री यशपाल सिंह: यह पार्लियामेंट की मेज पर रखा जा चुका है। हमारे मेम्बरों ने आकर मरी हुई छिपकली पकड़ी है।

Mr. Chairman: The hon. Member should look at the Chair. He should not go on speaking, without looking at the Chair. I think he can make reference only to the subject under discussion and nothing else. Therefore, instead of making allegations, he should confine himself to the Bill.

Shri Kapur Singh (Ludhiana): This House is entitled to a categorical refutation from the Treasury Benches as to whether or not the urine of the fish is included in the milk of the Delhi Milk Scheme.

Shri Shinde: I stoutly refute that allegation. It is totally incorrect.... (*Interruptions*).

Mr. Chairman: Order, order. I do not want many Members to be speaking at the same time. The hon. Member should appreciate that the Delhi Milk Scheme is not the subject-matter under discussion. We are discussing the prevention of the manufacture of Vanaspati. But he is speaking about the Delhi Milk Scheme.

श्री यशपाल सिंह: सभापति महोदय, क्या आप कोई ऐसा न्याय बतला सकते हैं, जिसमें बीज और पेड़ का ताल्लुक न हो, जिसमें सीड और व्हीट का ताल्लुक न हो,

फिर ग्राप इस बिल पर घी के लिये बोलने से कैसे रोक सकते हैं।

Mr. Chairman: I want the hon. Member to confine himself to the provisions of the Bill.

Shri Kapur Singh: My question about the urine of the fish and the fat of the frog still remains unanswered.

Mr. Chairman: I am not concerned with that. Only the provisions of the Bill are to be discussed; nothing else.

श्री यशपाल सिंह : बगैर दूध के घी कैसे बन सकता है, श्रीमन्? जब हम यह पर ग्राये हैं ग्रौर कानून बना रहे हैं, इस का ताल्लुक इलैक्शन के साथ है, मैं इस को कैसे छोड़ सकता हूं। यह चीज इतनी सत्य है जैसे 2 ग्रौर 2 चार होते हैं, जैसे दिन के बाद रात ग्राती है ग्रौर रात के बाद दिन ग्राता है, उसी तरह से यह सत्य है ....

सभापति महोदय : ग्रापके सामने जो विषय है, उस पर बोलिये।

श्री यशपाल सिंह : मैं बड़ी नम्रतापूर्वक पूछना चाहता हूं कि ये मेम्बरान जिनको 31 रुपये रोज मिलते हैं, ये यहां पर क्यों नहीं बैठते हैं, इस का कारण सिर्फ यही है कि ये दिल्ली मिल्क स्कीम का दूध पीते हैं।

श्री रघुनाथ सिंह (वाराणसी) : ग्रपोजीशन वाले ज्यादा पीते हैं, ग्रभी तीन ग्रादमी बैठे हैं, कांग्रेस वाले तो फिर भी ज्यादा बैठे हैं।

श्री यशपाल सिंह : दूध का सम्बंध श्रीमन, घी से है, बगैर दूध के घी कैसे बनेगा ? मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि यह देश के स्वास्थ्य का मसला है, इस मसले पर वह कोई एतराज नहीं कर सकते हैं।

Mr. Chairman: I want to bring to the notice of the hon. Member that hydrogenated oil is made from vegetable oil and not from milk.

श्री यशपाल सिंह : मैं प्योर घी के लिये प्लीड करता हूं, श्रीमन्, यह मेरा केस है जिसके लिये मैं लड़ता हूं, जिसके लिये मैं पालियामेंट में ग्राता हूं ग्रौर ग्रपने वोटर्स को कह कर ग्राया हूं कि मैं इस के खिलाफ लड़ूंगा, क्योंकि कोटोजम ग्रौर डालडा एटम बम से ज्यादा खतरनाक हैं। एटम बम तो एक दफा में जला देता है, लेकिन ये धीरे धीरे एक-एक इंच कर के मारते हैं। भट्टी में जला जला कर मारते हैं। यह बड़े महत्व का विषय है, जिसके लिये कि मैं पालियामेंट में ग्राया हूं, ग्रौर इस बिल को यहां पर रखा है। ग्रगर ग्राप कहते हैं कि बीज ग्रौर पेड़ का ताल्लुक नहीं है, तो बतलाइये बगैर दूध के शुद्ध घी कहां से बना लेंगे ? जैसा गांधी जी कहते थे कि जाली घी बनाने वाले को सजा दी जाय, उसके हाथ कटवा दिये जांय, उसको जेलखाने भेज दिया जाय, जब तक ऐसा कानून नहीं बनाया जायेगा, तब तक यह नहीं रुक सकेगा। स्वीडन के ग्रन्दर वहां की सरकार ने इजाजत दे रखी है कि वहां यह हाइड्रोजनेटेड ग्रायल बन सकता है, यह कोटोजम ग्रौर डालडा बन सकता है, लेकिन ग्रगर उस मुल्क की सरहद के ग्रन्दर कोई उस को बेचता हुग्रा पकड़ा जाता है, उस मुल्क के ग्रन्दर ग्रगर कोई उसे खाता हुग्रा पकड़ा जाता है, कोई खरीदता हुग्रा पकड़ा जाता है या उपयोग करता हुग्रा पकड़ा जाता है तो उसे सात साल की सजा दी जाती है।

दुश्मन की खिल्ली उड़ा लेना ग्रासान है, लेकिन दुश्मन से नसीहत लेना बहुत मुश्किल है दुश्मन का मजाक उड़ा लेना ग्रासान है लेकिन दुश्मन से किसी तरह की एडवाइस लेना मुश्किल है। पाकिस्तान के ग्रन्दर भी डालडा खाया जाता है, लेकिन चोरी छिपे खाया जाता है। पाकिस्तान के ग्रन्दर मैंने

[श्री यशपालसिंह]

गलियों गलियों में देखा है, उन के शहरों को देखा, उन के देहातों को देखा, गांवों गांवों को देखा, मैं ने पाकिस्तान का एक एक चप्पा देखा है, पाकिस्तान के अन्दर डालडा खाया जाता है लेकिन चोरी छिपे खाया जाता है। उसी तरीके से खाया जाता है जैसे कोई लड़की के ऊपर रुपया लेता है, जिस तरह से यहां पर कोई पाप करता है। वहां पर कहीं किसी सड़क पर लिखा हुआ नहीं है कि डालडा वनस्पति में विटामिन है, या रथ वनस्पति या पालकी बनस्पति में विटामिन है। उन के यहां यह पाप माना जाता है। इसी लिये मैं ने कहा कि दुश्मन से नसीहत हासिल करना बहुत मुश्किल काम है, हालांकि हमारी परम्परा दूसरी रही है। हम भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम क्यों कहते हैं, करुणा करुणालय भगवान राम को आइडियल क्यों मानते हैं, आनन्द कोटि ब्रह्माण्ड नायक भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम क्यों कहते हैं। इस लिये कहते हैं कि उन्होंने दुश्मन से भी नसीहत हासिल की थी। जब रावण मर रहा था तब उन्होंने लक्ष्मण को भेजा और कहा कि रावण के जा कर पैर छुओ, वह दुनिया का सब से बड़ा विद्वान है। जा कर उससे शिक्षा लो। देखो कि मरते वक्त वह क्या शिक्षा देता है। उसने जो शिक्षा दी, वह यह थी :

"शुभस्य शीघ्रम"

इस का मतलब यह है कि सब से पहले वह काम करो जो तुम्हारे स्वास्थ्य के लिये हो, जो तुम्हारे चरित्र के लिये हो, जो तुम्हारे आत्म निर्माण के लिये हो।

डालडा और कोटोजम के मसले में खिलाफ राजेन्द्र बाबू ने आवाज उठाई। उसके खिलाफ राजेन्द्र बाबू ने एक पूरी कमेटी बना कर कहा कि जब तक यह निषिद्ध नहीं किया जायेगा देश का स्वास्थ्य और चरित्र नहीं बन सकता। उस के खिलाफ महात्मा गांधी ने आवाज लगाई उसके खिलाफ मैं जानना चाहता हूं कि किस सन्त और महात्मा ने आवाज नहीं लगाई। लेकिन सरकार के कानों में जूं तक नहीं रेंगी, सिर्फ इस लिये कि सरकार आज कहती है कि अगर डालडा बन्द कर दिया जायेगा तो गरीब आदमी कहां से खायेंगे।

श्री उ० मू० त्रिवेदी (मन्दसौर) : डालडा मत बोलो, सब वैजीटेबल बोलो।

श्री यशपाल सिंह : मेरा मतलब उन सब वैजिटेबल घी से है जो आप खाते हैं।

श्री उ० मू० त्रिवेदी : मैं नहीं खाता हूं।

श्री यशपाल सिंह : जो लोग उस के लिये प्लीड करते हैं उन का आज तक कोई सिद्धांत स्थिर नहीं हो सका है। वह जो करें कहीं टिक नहीं सकते हैं क्योंकि उन का घी दूषित हो चुका है, उन का भोजन दूषित हो चुका है। वह देश को तबाह कर रहे हैं, वह सोचते हैं कि अगर वह हिन्दुस्तान से डालडा को खत्म कर देंगे, कोटोजम को बन्द कर देंगे तो हिन्दुस्तान की जनता स्वराज्य के अधिकारों को मांगेगी और इस गन्दी, सड़ी हुई सरकार को उलट देगी, वह इस लिये नहीं चाहते हैं कि हिन्दुस्तान स्वस्थ बने, हिन्दुस्तान अपने पैरों पर खड़ा हो। इस लिये नहीं चाहते कि देश का चरित्र बने। यह इस देश की डालडा सरकार की हालत है कि थोड़े से मासूम विद्यार्थियों के सामने उस के पैर उखड़ जाते हैं। वे आर एट ए लास व्हाट टू डू। जब इस तरह से उन के पैर उखड़ जाते हैं तब क्या चाइना के मुकाबिले खड़े रह सकेंगे, यह चाइना का मुकाबला कर सकेंगे। हर्गिज नहीं कर सकेंगे।

मेरी आप से यह अर्ज है कि यह उल्टे चलते रहेंगे अगर इन को समझाया नहीं जायेगा। अपोजीशन आटे में नमक के बराबर है। अपोजीशन में ताकत नहीं है कि उन को रोक दे? अपोजीशन तो यहां बराय नाम बैठा हुआ है। हालांकि मैं अपोजीशन के

सिद्धांत को मानता नहीं हूं । मैं उन का हितैषी हूं । जब यह गलत रास्ते पर चलते हैं और हम इनको समझाना चाहते हैं तब इनको बुरा लगता है । गीता माता में कहा है कि :

"यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम"

हमारी बात सुनने में कड़वी लगती है लेकिन उस का फल शहद के सदृश मीठा होगा । अगर इस देश के अन्दर दस सालों के लिये डालडा को और वनस्पति को बन्द कर दिया जाये तो देश का आत्मसम्मान जग जायेगा, देश चीन और पाकिस्तान को पीछे ढकेल देगा, देश अपने पैरों पर खड़ा हो जायेगा, चीन को हिमालय के उस पार कर देगा और चीन की यह हिम्मत नहीं होगी कि वह हमारी तरफ देख सके । डालडा ने हमारे 50 करोड़ इन्सानों को नपुंसक बना कर रख दिया । 50 करोड़ इन्सानों के बदले में अगर 50 करोड़ पेड़ होते, 50 करोड़ ट्रीज होते, तो उन में फूल और पत्ते निकलते । लेकिन 50 करोड़ इन्सान आज न कैलाश को वापस ले सकते हैं और न मानसरोवर को वापस ले सकते हैं । वह 50 करोड़ इन्सान हमारी 38 हजार मुरब्बा मील को वापस लेना तो क्या, कोई तारीख तय नहीं कर सकते हैं, कोई अल्टिमेटम नहीं दे सकते हैं । कारण यह है कि उन की सुनिश्चित नीति नहीं है । क्योंकि एज ए मैन इट्स सो ही विकम्स । वह बनावटी घी खाते हैं इस लिये उन की पालिसी बनावटी है, वह कृत्रिम घी खाते हैं इसलिये उनकी पालिसी कृतिम है । वह कहीं जा कर स्टेन्ड नहीं करते हैं । आप कोई और मुल्क दुनिया के तख्ते पर देख लीजिये, शायद ही कोई देश ऐसा हो जो कहता हो कि हमारी आर्थिकता के समुद्र में ज्वार भाटा आ रहा है । जो हमारे देश में सोने और चांदी का ढेर लगा हुआ है उसे चीन से देखा नहीं गया इस लिये उसने हमारे ऊपर हमला कर दिया । क्या कोई भी मुल्क आपने ऐसा देखा है । दिस इज ग्रेटेस्ट फ्राड आन ह्युमैनिटी । संसार की मनुष्यता को सब से बड़ा धोखा दिया गया है और वह बनावटी खाना खाने वालों ने दिया है । मैं साफ कहता हूं कि अगर यह डालडा बन्द कर दिया जाये, कोटाजम बन्द कर दिया जाये . . .

Shri Shinde: I just want to give some information to the hon. Member. Is the hon. Member not aware that, in most of the leading countries of the world, Vanaspati is manufactured and it is a common product of consumption?

श्री यशपाल सिंह : यह आप अपने भाषण में कहिये ।

Shri Raghunath Singh: He is delivering an election speech.

श्री यशपाल सिंह : क्यों नहीं । एलेक्शन आ रहा है । उसी से हम और आप यहां आये हैं । आप रोजाना एलेक्शन स्पीच करते हैं अगर मैं ने एक दिया तो क्या किया ।

डेनमार्क की आबादी 22 लाख की है, डेनमार्क में जितना घी पैदा होता है उतना उन के कुत्ते नहीं खा सकते, उन के खच्चर नहीं खा सकते, उन के घोड़े नहीं खा सकते । वे उस को खेतो में डालते हैं, वह सारी दुनिया को अपना मक्खन भेजते हैं । लेकिन हमारे यहां के 50 करोड़ इन्सान अपने लिये घी का मसला हल नहीं कर सकते । कारण यह है कि हम अपने गोधन के ऊपर छुरी चलाते हैं, जो गोमाता हमें धन धान्य से भर देती और हम अपना 10 अरब रुपया बचा लेते । मैं श्री रघुनाथ सिंह से कहना चाहता हूं कि 15 अरब रुपया फर्टिलाइजर पर खर्च हो चुका है, यह रुपया बरबाद हो चुका है । यह मसला काऊ डंग से हल हो सकता था । हमारी अपनी वन सम्पत्ति कम नहीं है । ग्रीन मैन्योर हमारे यहां कम नहीं है । हमारे यहां कोई कमी नहीं होती और अगर गो की रक्षा की जाती, गाय पर छुरी नहीं चलाई जाती तो दोनों मसले हल हो जाते । घी का मसला भी हल हो जाता और खाने का मसला भी हल हो जाता ।

[श्री यशपाल सिंह]

हम से ग्राज कहा जाता है कि हम तरक्की कर रहे है, लेकिन हमें कोई एक मुल्क बतला दीजिये जहां के लिये 50 लाख लोग भीख भेजते हों। 50 लाख की ग्राबादी कहे कि हिन्दुस्तान के स्कूलों के बच्चे भूखे हैं ग्रौर हम उन के लिये भीख भेज रहे है। सरकार ग्राज ग्रपोजीशन के कहने से नहीं मानेगी। ग्राप उन को बुला कर समझाइये कि यह देश के ग्रन्दर ग्रनर्थ हो रहा है। इस तरह से देश कभी उठ नहीं सकता, देश के ग्रन्दर कभी विकास नहीं हो सकता, ग्राप कोई निर्णय नहीं कर सकते जब तक देश के ग्रन्दर बनावटी घी बन्द नहीं होगा। ग्रगर यह बन्द नहीं होगा तो देश के ग्रन्दर ग्रौर भी गुलामी ग्रायेगी।

ग्राज सरकार सब से बड़ा बहाना यह करती है कि हमें घी के लिये रंग नहीं मिल रहा है। जिस चीज से घी ग्रौर कोटोजम का डिस्क्रिमिनेशन किया जा सके वह रंग नहीं मिल रहा है। ग्राज दुनिया ने हवाई जहाज बनाया, ऐटम बनाया, दुनिया चांद की थाह ले रही है, दुनिया ने राकेट बनाये, स्पूटनिक बनाये, दुनिया चांद के साथ बातें कर रही है, ग्रासमान को जमीन पर ला कर दिखला दिया ग्रौर इन बेचारों को रंग नहीं मिल सका। रंग ग्राप को इस लिये नहीं मिल सका कि ग्राप के ऊपर पूंजीपतियों का रंग है, उन पूंजीपतियों का जो करोड़ों रुपये डालडा से कमा रहे हैं, जो पूंजीपति उन को एलेक्शन के लिये थैलियां देते हैं। वह पूंजीपति नहीं चाहते कि कोटोजम बन्द किया जाये, वह नहीं चाहते कि डालडा बन्द किया जाये। पूंजीपति नहीं चाहते कि भारतमाता के सपूत ग्रसली घी दूध ले सकें, ग्रसली घी दूध का इस्तेमाल कर सकें। इस लिये पूंजीपतियों को खुश करने के लिये, थोड़े से मुट्ठी भर कैपिटलिस्ट्स जिन को खुश करने के लिये, यह सरकार डालडा ग्रौर कोटोजम का इस्तेमाल जारी रखना चाहती है ग्रौर उस के मैनुफैक्चर की इजाजत दी हुई है। ग्रगर देश की ताकत को सुरक्षित रखना है, ग्रगर देश के ग्रन्दर ग्रापको सच्ची ग्राजादी लानी है, ग्रगर हिन्दुस्तान के ग्रन्दर से ग्राप को चीनी लुटेरों को बाहर निकालना है, पाकिस्तान का मुंह मोड़ना है, ग्रगर हिन्दुस्तान की ग्राजादी की रक्षा करनी है, महात्मा गांधी के ग्रादेशों का पालन करवाना है ग्रौर सच्चे मानों में हिन्दुस्तान के कल्चर को जिन्दा रखना है तो एक कदम डालडा ग्रौर कोटोजम का मैनुफैक्चर बन्द किया जाये। मंत्री महोदय जो उनकी राय है इस मामले में, उसको दें, साफ गवर्नमेंट की जो नीति है उसको बतायें स्पष्ट नीति बतायें। ग्रगर वह मुझ से यह ग्राशा करते हैं कि मैं ग्रपने बिल को वापिस ले लूंगा तो मैं हर्गिज ऐसा करने वाला नहीं हूं। बेशक मुझे इस के पक्ष में एक ही वोट मिले, चाहे मुझे मेरा ही वोट मिले।

रामो द्विर्भाषते

राम के वंशज कभी बात कह कर उसको वापिस नहीं ले सकते। मुझे चाहे सिर्फ हाउस में एक ही वोट मिले, मेरा ग्रपना वोट मिले, मैं इसको वापिस लेने वाला नहीं हूं। कोटोजम ग्रौर वनस्पति के राक्षस के खिलाफ मैं ग्रावाज उठाता रहूंगा। साफ लफ्जों में मंत्री महोदय बतायें कि गवर्नमैंट की पालिसी इस मामले में क्या है ग्रौर कब तक वह हिन्दुस्तान की जनता को यह जहर पिलायेंगे, हिन्दुस्तान की जनता को कब तक बनावटी घी पिलायेंगे, कब तक हिन्दुस्तान की जनता को पंगु बनायेंगे।

एक तरफ तो ग्राप कहते हैं कि यह घी गरीबों के लिए है ग्रौर दूसरी तरफ उसी के ऊपर ग्राप ड्यूटी लगा रहे हैं। ग्रगर गरीबों के लिए डालडा है तो क्यों ग्राप इसके ऊपर ड्यूटी लगाते जाते हैं, ड्यूटी बढ़ाते जाते हैं। ग्रगर गरीबों के लिए है तो क्यों टैक्सों की भरमार की जाती है। हमारे देश में देहातों में ग्राप नौ रुपये सेर ग्रसली घी ले सकते हैं ग्रौर डालडा का भाव छः रुपये सेर है।

सिर्फ तीन रुपये का फर्क है। डालडा और कोटोजम जहर का काम करता है इंसान के लिए, एटम बम का काम करता है इंसान के लिए। एक सेर असली घी एक महीने तक के लिए काफी हो सकता है। डालडा और कोटोजम से बच्चों के दिमाग सड़ते हैं, माताओं और बहनों की तनदुरुस्ती खराब होती है, हिन्दुस्तान की नस्ल खराब होती जा रही है। उसको एक दम बन्द किया जाए मैं संसद के माननीय सदस्यों से भी प्रार्थना करूंगा कि वे इस मामले पर सोच विचार करें और मुझे सहयोग दें।

Mr. Chairman: Motion moved:

"That the Bill to provide for prohibition of manufacture and import of hydrogenated vegetable oils in India, be circulated for the purpose of eliciting opinion thereon by the 1st February, 1967."

श्री रघुनाथ सिंह : माननीय यशपाल सिंह जी के प्रवचन में शक्ति तो जरूर थी लेकिन कोई तत्व नहीं था। वे उस ढोल की तरह से बोले जो आवाज तो खूब करती है लेकिन कुछ देती नहीं है। नम्बर एक डालडा की तरह से वह बोले हैं। कोई तर्क उन्होंने उपस्थित नहीं किया। विवेक की बात आपने कोई नहीं कही है।

श्री यशपाल सिंह : हमारे लोग तनदुरुस्त बने असली घी खा कर, इससे बड़ा तर्क और क्या हो सकता है ?

श्री रघुनाथ सिंह : एक ही तर्क मुझे मालूम दिया है। यह इलैक्शन का समय है। इलैकशन स्पीच ही आपने दे दी है। मैं भी एक इलैकशन स्पीच देता हूं। मैं इसको आपकी एक सुन्दर इलैकशन स्पीच मान कर चलता हूं।

हमारे भाई ने कहा कि कुत्ता और गधा भी स्वीडन में घी खाता है। मुझे इसका पता नहीं है। लेकिन मैं इतना जानता हूं अगर कुत्ते को घी दिया जाए तो उसको खोरा हो जाता है इसके बाल झड़ जाते हैं। मुझे पता नहीं स्वीडन में घी कुत्ता खाता है या नहीं।

आपने गधे की बात भी कही है। गधे को घी हमने नहीं पिलाया है। आपने शायद गधे को घी खिला कर एक्सपेरीमेंट किया है यदि कर सकें तो एग्रिकलचर मिनिस्ट्री उससे उससे कुछ लाभ जरूर उठा सकती है।

एक बात आपने चीन की कही है। आपको मालूम होना चाहिये कि चीन वाले घी नहीं खाते हैं। दूध भी नहीं पीते हैं। जहां दूध नहीं होगा जहां घी नहीं होगा वहां वे उसे खायेंगे क्या। जहां दूध नहीं होगा वहां घी भी नहीं हो सकता है। इसलिए बिना दूध और घी खाए हुए और वैजीटेबिल आयल खा कर अगर चीन हिन्दुस्तान पर हमला कर सकता है तब तो हमको भी वैजीटेबल आयल खा कर उसके हमले का मुकाबला करने की स्थिति में हो जाना चाहिये अगर आपके तर्क को मान लिया जाय।

एक आपने उदाहरण यह दिया है कि सारी दुनिया में लोग घी खाते हैं। मैं आपको बड़ी विनम्रता के साथ कहना चाहता हूं। दुनिया में घी खाने का रिवाज सिर्फ हिन्दुस्तान में है केवल हिन्दुस्तान में पाकिस्तान के साथ साथ। इसके अलावा दुनिया में कहीं भी घी खाने का रिवाज नहीं है। थाइलैंड में, बर्मा में, साउथ ईस्ट एशिया के जितने देश हैं उनमें कहीं लोग घी नहीं खाते हैं। हां हिन्दुस्तानी लोग जहां गये हैं वे वहां घी खाते हैं। वहां उनके घी खाने का रिवाज है।

रामचन्द्र जी और लक्ष्मण जी के बारे में यह भी कहा गया है। यशपाल सिंह जी ने कहा कि भगवान राम के पास लक्ष्मण गए। मैंने बाल्मीकी रामायण चार पांच दफा पढ़ी है। आपने उद्धरण दिया है "शुभस्य शीघ्रम्" यह उस में कहीं नहीं है। जब रावण मारा गया गिर गया तब राम को पता चला।

[श्री रघुनाथ सिंह]

रावण मारा गया है उन्होंने लक्ष्मण से कहा रावण मारा गया है। इसकी अन्त्येष्टि करनी चाहिये लक्ष्मण रावण के पास गए। उसकी अंत्येष्टि करने के लिए। जो तर्क इन्होंने दिया है, वाल्मीकी रामायण के युद्ध कांड के किसी सर्ग में भी यह नहीं है।

एक माननीय सदस्य : डालडा रामायण पढ़ी होगी इन्होंने।

श्री रघुनाथ सिंह : एक बहुत सुन्दर बात उन्होंने कही है। आपने कहा है कि बनस्पति तेल का बनना रोक दिया जाए। बनस्पति से आप देखें कि सरसों का तेल बनता है, तिल का तेल बनता है, कोटोजम भी बनता है, डालडा भी बनता है। सब चीजें वनस्पति के तेल से बनती हैं। अगर आपकी बात को हम स्वीकार कर लें तो हिन्दुस्तान में कल से तेल बनने बन्द हो जायेंगे। जितने चूल्हे हैं हिन्दुस्तान में सब बन्द हो जायेंगे। और आपकी स्त्री आपको घर से पहले निकालेगी और हमारी बारी तो बाद में आएगी।

श्री यशपाल सिंह : भाभी जी ने आपको निकाल दिया होगा।

श्री रघुनाथ सिंह : घर में जो महिलायें हैं उनको तरकारी छौंकने के लिए, दाल छौंकने के लिए घी नहीं मिलता है तो वे तेल का प्रयोग करती हैं। बात असल में यह है कि अगर शुद्ध तेल हो तो वह भी उतना ही फायदेमन्द होता है जितना कि घी फायदेमन्द होता है। हमारे आयुर्वेद में—

श्री यशपाल सिंह : सौ परसेंट गलत है।

श्री रघुनाथ सिंह : आयुर्वेद जिस के आप बड़े भक्त हैं उस में एक स्थान पर आता है कि तेल और घी में क्या शक्ति है। वहां कहा गया है कि अगर तेल का मर्दन किया जाए शरीर में तो घी से दस गुना ताकत उस में होती है।

श्री यशपाल सिंह : सारे हाउस को मगुराह करते हैं ये। साफ उस में लिखा हुआ है :

घृतादृशगुणं तैल मर्दने न तु भक्षणे

Mr. Chairman: Order, order. Unless I ask the hon. Member to speak, he should not speak.

Shri Kapur Singh: He is misquoting, and misleading the House.

श्री रघुनाथ सिंह: यही तो मैंने कहा है कि अगर तेल लगाया जाए तो घी से दस गुना ज्यादा फायदा वह करता है। मेरी इस बात पर आप उलटे हो गए।

Shri Tyagi (Dehra Dun): On a point of order. There is no quorum.

Mr. Chairman: The bell is being rung....

There is no quorum. The bell may be run again.... Now there is quorum.

श्री रघुनाथ सिंह : इस सदन के सामने प्रश्न तो श्री यशपाल सिंह के विधेयक का था, लेकिन वह इस सम्बन्ध में गौ-हत्या और कई अन्य बातों को ले आए। अगर हिन्दुस्तान में गाय की रक्षा करनी है, तो उस के लिए उपाय करने होंगे। केवल शोर मचाने और भाषण करने से गाय की रक्षा नहीं होगी। घी तभी उपलब्ध होगा, जब अच्छी गायें होंगी। अगर हमारे यहां अच्छी गायें नहीं होंगी, तो अच्छा घी नहीं आ सकता है।

हमारे यहां पहले यह पद्धति थी—मैं काशी के बारे में जानता हूं—कि हर एक अच्छा गृहस्थ गाय रखता था। आज आप शहर के हर एक महल्ले में घूम आइये। आप को एक भी आदमी नहीं मिलेगा, जिस ने गाय रखी हो। मैं नहीं जानता कि माननीय सदस्य गायें रखते हैं या नहीं, लेकिन मेरे

यहां पन्द्रह गायें हैं। इस लिए मैं जानता हूं कि गाय रखने में क्या तकलीफ होती है। एक तो वे थोड़ा दूध देती हैं। दूसरे, देहात में गाय के चरने की जितनी भूमि थी, वह सब जोत ली गई है। किस ने जोती? हम आप ने जोती। लेंडलेस लेबर और छोटी जातों को खेत दे दिये गए हैं। आज सब से बड़ी समस्या यह है कि अगर गाय को रखा जाये, तो उस को चराने के लिये देहात में खेत नहीं हैं।

अगर कोई शहर में गाय रखना चाहे, तो वह कहां रखेगा? क्या छोटी सी कोठरी में रखेगा? चाहे गाय को अच्छे से अच्छा खाना दिया जाय, छः महीने के बाद वह दुबली-पतली हो जाती है।

इसलिए अगर हम घी चाहते हैं, तो उस का जो मूल स्रोत है, गाय, उस को पालने का इन्तजाम होना चाहिए। वह तभी हो सकता है, जब हर गांव में गोचर भूमि हो। जैसा कि पहले रिवाज था। हर शहर में थोड़ा सा ऐसा स्थान हो, जहां गाय चर सके। आराम कर सके। घी की समस्या इसी प्रकार हल हो सकती है।

अगर श्री यशपाल सिंह के विधेयक को स्वीकार कर लिया जाये और उस के अनुसार डालडा, कड़ुआ तेल, तिल का तेल और जमा हुआ तेल बन्द कर दिया जाये, तो आदमी क्या खायेगा? घी, दूध और मट्ठा तो मिलता नहीं है। तो फिर वह क्या खायेगा? माननीय सदस्य ने कोई विकल्प नहीं बताया है। हम डालडा आदि को जहर नहीं मानते हैं। हिन्दुस्तान में पचास करोड़ आदमी डाल्डा और वेजीटेबल आयल आदि खाते हैं, लेकिन कोई मरता नहीं है, बल्कि हम और आप लड़ते हैं कि हम को डाल्डा का कोटा मिले।

इस में सन्देह नहीं है कि घी अच्छा है, लेकिन जब घी नहीं है, तो आखिर जनता का काम कैसे चलेगा? इस लिए हमें इस बात पर जोर देना चाहिए कि लोगों को शुद्ध डालडा, वेजीटेबल आयल और कड़वा तेल आदि मिलें।

श्री यशपाल सिंह: डाल्डा हमारे लिए शराब की तरह त्याज्य और हराम है। जिस तरह शराब हराम है, उसी तरह हमारे लिए डाल्डा और कोटोजेम हराम हैं।

श्री रघुनाथ सिंह: ईसाई धर्म और मुसलमान धर्म मानता है कि शराब हराम है, लेकिन दुनिया में जितने ईसाई हैं, उन में से 99 परसेंट शराब पीते हैं। केवल हराम कहने से ही शराब हराम नहीं हो सकती है।

जहां तक डाल्डा को घी कह कर बेचने का प्रश्न है। इस सदन में बहुत बार यह सवाल उठा है। यह सुझाव दिया गया है कि हम डालडा को इस तरह रंग दें कि उस से घी का भ्रम न हो। गरीब आदमी डाल्डा को घी समझ कर खरीदता है। अगर असली घी में डालडा मिला दिया जाये, तो उस को अलग नहीं किया जा सकता है। आज-कल होता होता यह है। डालडा को दूध या दही में डाल दिया जाता है। उस को मथ देते हैं। और उस घी को असली कह कर बेचते हैं। इस समस्या का निराकरण इस प्रकार होगा कि डालडा या जमे हुए तेल में कोई रंग मिलाने की व्यवस्था की जाये, ताकि जनता समझ सके कि वह असली घी क्या है। नकली घी क्या है। अगर यह व्यवस्था हो जायेगी, तो हमारी समस्या बहुत कुछ हल हो सकती है।

इन शब्दों के साथ मैं इस बिल का इस लिए विरोध करता हूं कि यह बिल अव्यवहारिक है। प्रैक्टिकल नहीं है और इस से देश का कोई फायदा नहीं होने वाला है। देश का फायदा इस तरह हो सकता है कि हम वेजीटेबल आयल को रंग दें। शुद्ध तेल की व्यवस्था करें और गाय का पालन करें ताकि वह दूध दे। और उस से घी बने।

श्री वाल्मीकी (खुर्जा) : सभापति जी, केवल भावनाओं में बह कर किसी भी प्रकार की समस्या का हल नहीं हो सकता है । इस सदन में डालडा और वनस्पति घी के बारे में अनेक बार चर्चायें हुई हैं । मेरा भी यह विचार है कि डालडा, वनस्पति घी और असली घी के बीच में अन्तर होना चाहिए । बातों को बढ़ा चढ़ा कर कह कर हम जन-साधारण की भावना को जीत नहीं सकते हैं । हमारे देश के जन-साधारण के मस्तिष्क में घी बैठा हुआ है और घी भावनाओं का द्योतक है, हृदय के विचारों का द्योतक है । घी की पवित्रता और शुद्धता बनी रहनी चाहिए । लेकिन आज के वातावरण में जब एडल्ट्रेशन और मिलावट का जोर है, अनेक प्रकार के खाने पीने की वस्तुओं में मिलावट घुस गई है, सारी जीवन-पद्धति पर उस का प्रभाव पड़ा है, तो उस से घी का प्रभावित होना भी अनिवार्य है ।

जहां तक घी का सम्बन्ध है, साधारण आदमी घी के बारे में सोचता है, लेकिन अब परिस्थितिवश होली-दीवाली पर वह केवल तेल के बारे में ही सोचता है । हमारे देश का वातावरण ऐसा रहा है कि बहुत चमतकृत जीवन से हम प्रभावित नहीं होते हैं । कोई बहुत अच्छी वस्तुयें या खाने आदि का हम पर प्रभाव नहीं होता है । मैं यह कहने के लिए तैयार हूं कि जो यह बात कही जाती है, "देख पराई चूपड़ी क्यों ललचावे जी, रूखी सूखी खाय के ठंडा पानी पी", वह हमारे जन-साधारण की भावना का द्योतक है, उस के हृदय के विचारों को प्रकट करता है ।

साधारण आदमी की रोटी अभी रूखी-सूखी है । उस पर कोई चुपड़न आ जाये, चिकनाहट फैल जाये—वह घी की हो या शुद्ध तेल की हो— सरकार की ओर से वह प्रयत्न नहीं हो रहा है । यद्यपि कानून पास किये जाते हैं, लेकिन उस का प्रभाव नहीं के बराबर है । मैं कहने के लिए तैयार हूं कि सरकार को तेल में, या खाने-पीने की वस्तुओं में, या घी में कोई अन्तर लाना चाहिए । चन्द वर्षों से यह विचार आता रहा है कि घी के रूप में और डालडा वनस्पति के जमे हुए रूप में विशेष कोई अन्तर नहीं आया है । सरकार आज यह खोज करती है और वह खोज चलनी चाहिए । खोज जीवन का सहारा होता है । खोज हमें कहीं तक ले जाती है । खोज का नतीजा यह हुआ है कि आज हमारे साइंसदां और विज्ञानवेत्ता पिछले चन्द वर्षों से प्रयत्न करते चले आ रहे हैं लेकिन मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि वनस्पति के अन्दर कोई किसी प्रकार का कलर या रंग न दिया जा सका जिस को देखकर अन्तर भेद किया जा सके और अन्तर को समझा जा सके । वह खोज सरकार नहीं कर सकी है । सरकार को वैसा प्रयत्न करना चाहिए । जन-साधारण चाहता जरूर है कि घी घी रहना चाहिए, वनस्पति वनस्पति रहना चाहिए, उस का जमा हुआ रूप या तो तेल की शक्ल में । कोई भी खाने की चीज हो, उस की शुद्धता की गारन्टी हो और लोगों के जीवन में वह बात आनी चाहिए ।

मैं आज आप का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि जब हम घी के बारे में सोचते हैं तो पशुधन की ओर हमारा ध्यान जाता है । हमारे जीवन की बढ़ती हुई पद्धति और विकास के साथसाथ, पंच वर्षीय योजनाओं के विकास के साथ साथ हम यह देखते हैं कि हमारे देश का पशुधन गिर रहा है, हमारी पशु सम्पत्ति का ह्रास हो रहा है और यही नहीं कि मैं विशेषकर गऊ की ओर आप का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, मेरा यह विश्वास है कि गऊ को न मारा जाय, उस की रक्षा हो—'गवां मा हिंसी' अभी माननीय सदस्य कह रहे थे गउओं को पालने की ओर ध्यान दिया जाय । वह गऊ के प्रति प्रेम और सद्भावना है हमारी सभ्यता, संस्कृति गऊ के चारों ओर घूमती है, यह विचार भी है ।

लेकिन जो न्यायसंगत व्यवहार गऊ के साथ होना चाहिए या दूध देने वाले सभी जानवरों के साथ होना चाहिए, वह नहीं है। जहां तक चरागाह आदि का संबंध है सारे देश के अन्दर अगर आप देखें कि जबकि चकबन्दी चल रही है और यह एक प्रकार से आदेश है कि चरागाह की जमीनें छोड़ी जायेंगी गांवों के अन्दर भी और शहर के आसपास भी, लेकिन चरागाहों की जमीनें जो बलशाली लोग हैं, जबर्दस्ती हल के नीचे ले लेते हैं और वह कोई गऊ के लिए भैंस के लिए, बकरी के लिये या दूसरे जानवरों के लिए छोड़ने की बात नहीं है, यहां तक कि शूकर आदि, यदि इन का भी समाज में एक स्थान है, तो उनके लिए भी कोई जमीन चरने की नहीं है। मैं यह जरूर कहना चाहता हूं कि जहां तक मिलावट का संबंध है, बहुत सी चीजें घी के अन्दर मिलायी जाती हैं। लेकिन तेल वनस्पती का मिलाया जाना बहुत खतरनाक है। तो मैं कोई भावना की बात नहीं करता। हमारे देश के अन्दर गो-हत्या निरोधक आन्दोलन चल रहे हैं। जिस असंद विचार से जिस उत्तेजना से, जिस गड़बड़ी से यहां वह उस को बन्द करना चाहते हैं, उस का कोई प्रभाव नहीं होता है। यहां सदन के अन्दर और बाहर भी इस तरह के लोग हैं जो इस विचार के पोषक हैं और उस में एक सहायता चाहते हैं, उस को बढ़ाना चाहते हैं। मेरा यह पूर्ण विश्वास है कि सरकार इस प्रकार का प्रयत्न करे ताकि उस की रक्षा हो सके और उस तरह से कोई प्रयत्न हो सके। लेकिन जब तक आप यह नहीं चाहते कि खूब दूध बढ़े, तब तक यह नहीं हो सकता क्यों कि दूध के साथ साथ घी भी पैदा होता है, लेकिन आज की हालत में जो घी बढ़ती हुई कीमत है उस के कारण साधारण आदमी घी नहीं खरीद सकता है। अब डालडा में या घी की कीमत में तीन या साढ़े तीन रुपये का अन्तर है। मैं उस अन्तर को नहीं मानता हूं। मनुष्य की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह घी खाना चाहता है या जमा हुआ तेल या डालडा या वनस्पति खाना चाहता है। यह उसकी इच्छा पर है। लेकिन दोनों में अन्तर होना चाहिए। साइंस के तरीके से सरकार को विचार के साथ सामने आना चाहिए। घी के कुछ लाभ हैं। वैसे तो यह कहते हैं कि घी खाने से भी खून की आर्टरी पर असर पड़ता है, नसों पर असर पड़ता है और उससे कुछ दिल की बीमारियां पैदा होती हैं। इस तरह के विचार सामने आते हैं। कुछों का यह विचार है और कुछों का विचार यह नहीं है। लेकिन यह बात भी साफ है कि जो आज डालडा, वनस्पती या और इस तरह का घी हमारे देश में चलता है, दुनिया की बात मैं नहीं जानता लेकिन जो हमारे देश में चलता है, मानव-जीवन पर, मनुष्य के जीवन पर उस का क्या प्रभाव पड़ता है, सरकार को साइंसदानों की, विज्ञानवेत्ताओं की रिपोर्ट इस पर सामने लानी चाहिए। मैं यह जरूर चाहता हूं भावना के साथ में घी और वनस्पति डालडा आदि में एक अन्तर्भेद होना चाहिए और उस अन्तर्भेद के लिए मैं समझता हूं कि पिछले चन्द वर्षों में ऐसी आवाज उठाई गई है कि वनस्पति घी के अन्दर किसी प्रकार का कोई कलर मिलाया जाय। मुझे इससे कोई इन्कार नहीं है, आप उसे घी कहें, या तेल कहें, तेल भी खाया जाता है, घी भी खाया जाता है, खाने की वस्तुयें हैं, उस का क्या प्रभाव होता है, यह अलग बात है। लेकिन आपको यह प्रयत्न करना चाहिये कि किसी न किसी प्रकार की विज्ञान की खोज से कोई ऐसा रंग उत्पन्न करे कि जो शरीर के लिए हार्मफुल न हो, उससे कोई नुकसान न हो और उस से आदमी अन्तर कर सके। इस ओर आप को ध्यान देना चाहिए और यह जरूरी बात है कि इस की ओर आप प्रयत्न करें। विशेषकर आज देश के अन्दर पशुधन और गऊ आदि का जो ह्रास हो रहा है, उनके दूध देने की शक्ति कम हो रही है, चरागाह का प्रबन्ध नहीं हो रहा है, इस ओर भी सरकार को, खाद्य मंत्रालय को और कृषि मंत्रालय को ध्यान देना चाहिए जिससे कि पशुधन में वृद्धि हो सके, पशु सम्पत्ति बढ़ सके और देश में और दूध घी हो सके। मैं यह नहीं मानता कि घी से शक्ति

[श्री बाल्मीकी]

आती है या किस तरह से आती है। वह एक अलग बात है। लेकिन शरीर के अन्दर शक्ति और पुष्टता खाने की शुद्ध वस्तुओं से आती है। मैं कोई दोषारोपण नहीं करना चाहता लेकिन यह जरूर चाहता हूं कि आप को घी और वनस्पति तेल, जमे हुए तेल आदि में अन्तर लाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए और विशेषकर पशुधन की गिरती हुई अवस्था को सुधारने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। इन शब्दों के साथ मैं ठाकुर यशपाल सिंह के बिल की भावना का समर्थन करता हूं। सरकार को उस ओर ध्यान देना चाहिए।

श्री गौरी शंकर कक्कड़ (फतेहपुर) : चेयरमैन साहब, यह जो यशपाल सिंह जी ने विधेयक प्रस्तुत किया है इस में एक सुन्दर अवसर विचार प्रकट करने का अवश्य मिलता है। मैं इन के विधेयक से इस तरह से सहमत हूं कि यह डालडा जो बनाया जाता है और जिस का प्रयोग प्रायः शुद्ध घी में मिलावट के कार्य में किया जाता है इस पर तो अब सरकार को ध्यान देना चाहिए। श्रीमन्, मुझे इस बात का ज्ञान है कि पिछले वर्षों में कई बार इस बात का प्रश्न उठाया गया कि डालडा जो प्योर घी में मिलाया जाता है वह बहुत हानिकारक होता है और उस का कोई न कोई उपाय सरकार को सोचना चाहिए। मुझे याद है, हमारे खाद्य मंत्री सुब्रह्मण्यम जी ने पिछली बार यह कहा तीन बार इस विषय में एक्सपर्टस कमेटी बनाई गई, लाखों रुपये का खर्चा उन के ऊपर आया और माननीय खाद्य मंत्री ने पिछली बार इस चीज को साफ कर दिया क कि कोई भी संभावना में इस बात की नहीं है कि डालडा या वेजीटेबल को किसी प्रकार से रंग बनाकर भिन्न भिन्न कर दिया जाय ताकि शुद्ध घी में उस की मिलावट न हो सके। मुझे बड़ा आश्चर्य है, मुझे खेद है, मैं स्वयं एस्टीमेट्स कमेटी के सिलसिले में देहरादून गया था, वहां प्रयोगशाला को देखा, खाद्य मंत्रालय की ही प्रयोगशाला वह है, वहां पर उन लोगों ने हम को एक पाउडर दिखलाया जिसका उन्होंने अनुसंधान किया है और यह अपना मत प्रकट किया श्रीमन्, कि यह एक ऐसा केमिकल है, ऐसी चीज तलाश कर के उन्होंने निकाली है कि जिस के द्वारा वनस्पति को रंग दिया जा सकता है और जनस्वास्थ्य के ऊपर उस का कोई भी असर खराब नहीं पड़ेगा। मुझे आश्चर्य होता है जब हमारी साइंस, हमारा विज्ञान और हमारी डाक्टरी इस हद तक आगे बढ़ गई है, तो आज इस बात का खेद है कि सरकार की ओर से यह मत प्रकट किया जाता है कि जो एक्सपर्टस इस विषय पर बिठाले गए एक बार, दो बार, तीन बार, आज तक वह इस में कामयाब नहीं हुए, उन को सफलता प्राप्त नहीं हुई कि वह इस को रंग दे दे ताकि शुद्ध घी में मिलावट न हो सके। श्रीमन्, मुझे मजबूरन यह कहना पड़ता है और मैं ही नहीं कहता यह देश के प्रत्येक नागरिक की आवाज है कि रंग न मिलने का मुख्य कारण यह है कि जो डालडा बनाया जाता है, जो प्राइवेट सेक्टर के द्वारा यह चीज बनती है, उन का लाभ और सरकार का लाभ करों के द्वारा इससे है और विशेषकर के कुछ चुने हुए सरमायादार जो इसको बनाते हैं उनका नुकसान न हो जाय, इसलिए केन्द्रीय सरकार हर बार इस बात को कहती है कि यहां पर साइंस फेल कर गई, यहां पर डाक्टरी फेल कर गई और कोई रंग उस को नहीं मिला है, इस चीज का मुझे बहुत बड़ा खेद है।

इस में तो कोई सन्देह नहीं कि मिलावट तो हर चीज में हानिकारक होती है, एक बार डालडा इतना हानिकारक न हो, लेकिन शुद्ध घी में मिलाकर उसको बेचना कहीं ज्यादा हानिकारक है।

चेयरमैन महोदय, मैं क्या कहूं, जैसे जैसे स्वतन्त्रता के दिन बढ़ते जाते हैं, अब तो यह हो रहा है कि इस देश में भारत के नागरिक जो सांस लेते हैं, जो वायु उनके अन्दर जाती है, वह भी शुद्ध है या अशुद्ध। खाने-पीने की चीजों में, दवा-दारू में मिलावट बढ़ती जा रही है। तो मैं यशपाल सिंह जी को बधाई इसलिए देता हूं कि उनके इस विधेयक

के लाने से आज यह बात शायद सामने आ जाय कि यह सरकार डालडा या वैजीटेबिल के बनाने में किसी प्रकार का कोई रंग मिलाने के लिए सदैव के लिए असमर्थ है। मैं यशपाल सिंह जी की इस राय से तो सहमत नहीं हूं कि डालडा बने ही नहीं, हम शुद्ध मस्टर्ड आयल खायें, प्योर डालडा खाय, लेकिन घी के साथ उसके मिलावट को रोकना जरूरी है।

मुझे खूब याद है कि जब पहले-पहले वैजीटेबिल मैन्यूफेक्चर हुआ, यह सन् 1936 की बात है, उस वक्त मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ता था, वहां पर एक नुमायश हुई, जिसके एक केन्द्रित स्थान पर इस के स्टाल को रखा गया था, तथा लोगों को उस का एक-एक सेर का डिब्बा फ़्री दिया गया था, उसके खस्ता, समोसे तैयार किये जाते थे और लोगों को मुफ्त खिलाये जाते थे। आपको भी श्रीमन्, अनुभव होगा कि इतना होने पर भी कोई उसके निकट नहीं जाता था, हर व्यक्ति यह कहता था कि यह घासलेट है, और इस के सामने अपनी नाक बन्द कर लेते थे। परन्तु यह युग प्रचार का युग है, पब्लिसिटी का युग है, आज उसी वस्तु का मूल्य इतना हो गया है कि 6-7 रु० सेर बिकता है। श्रीमन्, उस समय यह ऐसा अछूत माना जाता था कि घर में घासलेट का प्रवेश कम से कम पूजा-पाठ के स्थानों में, सत्य नारायण की कथा में, हवन आदि में नहीं होता था, इन स्थानों से उसको काफ़ी दूर रखा जाता था, परन्तु आज मैं यह देखता हूं कि उसका प्रवेश इस हद तक हो गया है कि प्रसाद रूप में या किसी भी चीज में उसका इस्तेमाल करने में कोई रुकावट नहीं है।

सरकार का एक तर्क आता है और वह यह है कि हम ने बड़े बड़े डाक्टरों से सलाह ले ली है तथा जो बड़े बड़े योग्य डाक्टर हैं, उन्होंने एक मत होकर यह कहा है कि जन-स्वास्थ्य के लिए वेजीटेबिल या डालडा खाना हानिकारक नहीं है तथा इसी तर्क को सामने रख कर सरकार इस में रंग मिलाने वाली बात पर राजी नहीं होती है—यह बात मेरी समझ में नहीं आती है। जहां तक डाक्टरों का मत है कि यह हानिकारक नहीं है, वहां तक तो ठीक है, आप वैजीटेबिल या डालडा बनायें, लेकिन शुद्ध घी के साथ उसकी मिलावट को रोकने के लिए अगर रंग नहीं मिलाते हैं, तो इस से यह प्रकट होता है कि आपका हृदय शुद्ध नहीं है, आपकी नीयत शुद्ध नहीं है और आप दयानतदारी के साथ इस तरफ कदम नहीं उठा रहे हैं, क्योंकि आपके ऊपर कोई बोझ पड़ रहा है, कोई असर पड़ रहा है, आपके आय-कर में कमी हो जायगी, आपके खजाने में रुपया कम हो जायगा या जो चन्द लोग हैं, जो इसका व्यवसाय करते हैं, उनको प्रोत्साहन नहीं मिलेगा—यह कारण है। इस लिए, सभापति महोदय, इस अवसर पर मैं खाद्य मंत्री से यह प्रश्न पूछना चाहता हूं कि यह ध्येय क्या बिल्कुल हमेशा के लिए समाप्त हो गया है, या अभी भी कोई प्रयास चल रहा है—दिखाने के लिए, कि कोई रंग आयेगा ताकि शुद्ध घी के साथ मिलावट न हो सके।

मुझे आश्चर्य होता है जब कि इस आधुनिक युग का डाक्टर एलोपैथिक डाक्टर यह कहता है कि शुद्ध घी में कोई भी पौष्टिक चीज नहीं है। मेरी उन से बात हुई तो वह यह कहते हैं कि यह तो केवल लुब्रीकेशन का काम करता है। मैं स्वयं तो डाक्टर नहीं हूं, मगर मैं यह जरूर देखता हूं कि जब से मैं पैदा हुआ हूं, चाहे दूसरे देशों में ऐसा न होता हो, लेकिन हमारी परम्परा, हमारा विकास, जब से हम पैदा हुए, पले, हमारी हड्डियां और मांस शुद्ध घी खा कर ही बढ़े हैं। यह डाक्टरों का मत है, इस लिये उस चीज पर नहीं जाता हूं लेकिन मैं इस चीज की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि कम से कम अब इस में ऐसी चीज करें और सच्चाई

[श्री गौरी शंकर कक्कड़]

के साथ करें ताकि देहातों में जो यह डालडा प्रवेश कर गया है, गांवों में जहां घी बनता है, वहां लोग दूध के साथ ही उसको भी गरम करते हैं, और इस तरह से मिला देते हैं कि मिलने के बाद असली घी नजर आता है। फिर वह 9—10 रु० किलो बिकता है। लाभ की दृष्टि से इस तरह की चीजें होती हैं। मक्खन में भी प्रायः बड़े शहरों में इस तरह की मिलावट की जाती है। वेजीटबिल या डालडा को इस तरह से मिला दिया जाता है, कि कोई भी उस मिलावट को पकड़ नहीं सकता है।

श्रीमन् अन्त में मैं एक बात और कहना चाहता हूं। मुझे एक शायर का शेर याद आ गया है, आपकी इजाजत से मैं उसे यहां पर पढ़ना चाहता हूँ

पहले देश की नारी जनती थी, अब प्रत्येक
नागरिक जनता है,

पहले घी से वेजिटेबिल बनता था, अब
वेजीटेबिल से घी बनता है।

श्री राधेलाल व्यास (उज्जैन) : सभापति महोदय, जो विधेयक हमारे सामने श्री यशपाल सिंह जी ने रखा है, मैं समझता हूं कि यह बहुत ही अच्छा काम उन्होंने किया है एक मौका दिया है कि इस विषय पर चर्चा की जाय, विचार किया जाय। जहां तक वेजीटेबिल की बात हैं, यह तो ठीक है कि वह घी का मुकाबला नहीं कर सकता और यह भी सही है कि उसकी वजह से घी में तमाम मिलावट हो रही है। लेकिन मैं यह बतलाना चाहता हूं कि जिस समय वैजीटेबिल नहीं बना था उस वक्त भी घी में मिलावट करने वाले लोग मौजूद थे और प्योर घी कभी कभी नहीं भी मिलता था।

मुझे मालूम है, मेरे निर्वाचन क्षेत्र में आज से 50 साल पहले नागदा के पार रुहेल गांव है, वहां के लोग मशहूर थे, जो तेल को जमा कर घी के रूप में डिब्बे के डिब्बे बम्बई भेज कर खूब रुपया कमाते थे। उस यह वक्त की बात है जब हाईड्रोजिनेशन लोगों को नहीं मालूम था, वे लोग कहते हैं कि ऐसा होता था, आज भी वे लोग मौजूद हैं। मैं एक और उदाहरण दूं, 1948 में मैंने खुद देखा, मैं ग्वालियर में बाजार में घी खरीदने के लिए गया, वहां पर तीन डिब्बे रखे हुए थे, एक तीन रुपये सेर, दूसरा ढाई रुपये सेर, तीसरा दो रुपये सेर, मुझ से पूछा कि कौन सा दूं। यह घी की ही मिलावट की बात नहीं है, आज तो सब चीजों में मिलावट हो रही है, खाने पीने की चीजों म—मिर्च में, हल्दी में, दूध में, यहां तक कि मलाई भी ब्लाटिंग पेपर की बनती है। दिल्ली मिल्क स्कीम में लोगों ने देखा कि दही पर ब्लाटिंग पेपर निकला। इस चीज के लिए हम को समाज को तैयार करना होगा ताकि हम मिलावट से दूर रहें। बगैर इस के यह चीज रुक नहीं सकती है किसी तरह से।

हां एक बात हो सकती है। आखिर हम वैजिटेबल घी का उपयोग किस तरह से करते हैं। अगर रोटी में चुपड़ना होता है तो उस को पिघला कर ही ऐसा किया जाता सकता है, अगर अगर कढ़ाई में डालना होता है तो भी उस को पिघलाना पड़ता है, इस लिए क्यों न इस का जमाया जाना बन्द कर दिया जाये। इस में क्या आपत्ति हो सकती है अगर वह पिघला हुआ ही रहे। जो उस में सुगन्ध होती है उस को आप निकाल दीजिये और उसको शुद्ध कर के काम में लाया जाये। उसको बिलकुल सुगन्धहीन बना दिया जाये। इस तरह से इस के बनने में कोई रुकावट नहीं होगी और जो व्यापारी इस को घी म मिला कर बेचते हैं वह भी बन्द हो सकता है। इस लिए शासन को इस बात पर विचार करना चाहिये

कि वह इस को जमाना बन्द कर दे ताकि वह शुद्ध रुप में बाजार में मिले। जिस रूप में वह होता है उसी रूप में मिले तो ठीक है।

Mr. Chairman: The hon. Member may continue his speech on the next day. The House stands adourned to meet again on Monday, the 21st November, 1966 at 11 A.M.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Monday, November 21, 1966/Kartika 30, 1888 (Saka).

GMGIPND—L S II—2084 (Ai) LS—23-12-1966—970.